"वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का प्रारुप

शोधकर्ता

शिंदे अनुराधा नामदेवराव

डी.एड., एम.ए., एम.एड., एम.फिल.

शोध निर्देशक

डॉ. काळे लक्ष्मण तुळशीराम

हिंदी विभागाध्यक्ष

राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड जि.नांदेड

अप्रैल 2019

“वीरेंद्र जैन के उपन्यासों मे चित्रित समस्याओं का अनुशीलन”

- भूमिका
- अनुसंधान कार्य का उद्देशा
- अनुसंधान का पुर्वानुमान
- अनुसंधान कार्य की उपयोगीता
- अनुसंधान कार्य पध्दतियाँ
- अनुसंधान की रुपरेखा

प्रथम अध्याय : “वीरेंद्र जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व”

द्वितीय अध्याय : “वीरेंद्र जैन के उपन्यासों मे चित्रित ग्रामीण समस्याएँ ”

तृतीय अध्याय : “वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित बाँध पीडित अदिवासीयों की समस्याएँ”

चतुर्थ अध्याय : “वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित महिलाओ की समस्याएँ”

पंचम अध्याय : “वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ ”

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ

भूमिका :

हिंदी साहित्य एक व्यापक और विकसित साहित्य है। यह साहित्य कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं सें संपन्न है। इसमें से ही उपन्यास विधा है। उपन्यास विधा को विकसित बनाने के लिए कई ऐसे पुरुष एवं महिला उपन्यासकारों ने अपना योगदान दिया है। इनमें से प्रेमचंद, नागार्जुन, मोहन राकेश, जैनेद्र कुमार, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि उपन्यासकार है। इनमें से ही एक उपन्यासकार वीरेंद्र जैन जी है।

वीरेंद्र जैन जी ने उपन्यास, कहानी, हास्यव्यंग्य अदि विधाओं पर लेखन कार्य किया है। वीरेंद्र जैन जी का 'शब्दबध' उपन्यास मुझे बहुत अच्छा लगा। इसलिए मैने एम. फिल के लघुशोध प्रबंध का विषय वीरेंद्र जैन कृत उपन्यास 'शब्दबध' का अनुशीलन के रुप में चयन किया। एम. फिल. के समय ही मेरी यह धारणा बनी थी कि आगे चलकर वीरेंद्र जैन के सभी उपन्यासों का अध्ययन करना उनके समग्र उपन्यासों का अध्ययन करने की मेरी जिज्ञासा बढती ही गई। अखिरकार मेरी इस जिज्ञासा का समाधान करने का सुअवसर मेरे गुरुवर्य प्रा. डॉ. लक्ष्मण काळे जी ने पीएच.डी. का विषय 'वीरेंद्र जैन' के उपन्यासों में चित्रित समस्याओ का अनुशीलन के रुप में देकर पूर्ण किया। इस वजह सें मैं अपने आपको बहोत भाग्यशाली समझती हूँ।

हिंदी जगत में वीरेंद्र जैन का स्थान समकालीन हिंदी उपन्यासकारों में महत्वपूर्ण है। उनका पहला उपन्यास १९७८ 'सुरेखा पर्व' प्रकाशित हुआ। उपन्यासकार वीरेंद्र जैन ने समाज में स्त्री के प्रति शोषित घटनाओं के संबध में उपन्यास लिखे है। उन्होंने कई वैविध्यपूर्ण उत्कृष्ट उपन्यास रचनाएँ हिंदी साहित्य को दी है। वीरेंद्र जैन के उपन्यास लेखन पर दृष्टिक्षेप करने के बाद कहा जा सकता है कि स्त्री के शोषण की नारी - पुरुष संबंधो, ग्रामीण एवं शहरी जीवन में आऐं हुऐ समस्याओं के अलवा जैनजी ने अनेक सामाजिक, अदिवासीयों प्रती आर्थिक, राजनीतिक तथा विविध संदर्भो के दायरे में उपन्यास लिखे है। नारी की दुर्दशा एवं शोषण, ग्रामीण समस्या, बाँध पीडित अदिवासीओं की समस्याँ,

कार्यालीन भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता अदि विविध विषयों पर उपन्यास लिखकर

वीरेंद्र जैनजी ने अपनी उपन्यासकार की भुमिका निभायी है। उन्होंने मध्यमवर्ग एवं निम्नवर्ग के जीवन सें संबधित उपन्यासों की रचना की है।

वीरेंद्र जैन ने समकालीन विषमता, नारी की समस्या, शोषण, कृषक जीवन, अंधश्रध्दा एवं बाह्याडंबर को व्यक्त किया है। ग्रामीन जीवन के साथ - साथ नागरी जीवन में जीवन बीता रहे व्यक्ति के द्वन्द को सूक्ष्म रुप में आँका है। उनके उपन्यासों में नई - नई समस्याओं का निर्माण हुआ है।

इसी कारण शोध प्रबंध को शीर्षक दिया है। "वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन" यह शोधप्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

अनुसंधान का उद्देश्य :

प्रस्तुत अनुसंधान के विषय शीर्षक को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित रुप सेअनुसंधान का हेतु एवं उद्देश्य है।

1) समकालीन साहित्यकार वीरेंद्र जैन के उपन्यासों का अध्ययन करना ।

2) वीरेंद्र जैन के उपन्यास में ग्रामीण जीवन पर प्रकाश डालना ।

3) वीरेंद्र जैन जी के उपन्यासों के माध्यम से नारी जीवन और उसकी समस्याओं का अध्ययन करना ।

4) वीरेंद्र जैन के साहित्य के माध्यम सें भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री के स्थान (दर्जा) और अस्तित्व को उजागर करना।

5) वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में बाँध पीडित आदिवासी जीवन समस्या को जानना।

6) वर्तमान समय मे समाज के सम्मुख वीरेंद्र जैन के उपन्यासो को यथार्थता का परिचय देना। आदि

अनुसंधान कार्य का पुर्वानुमान :

किसी भी विषय पर अनुसंधान कार्य करने से पूर्व उस अनुसंधान कार्य के पूर्वानुमान या कामचलाऊ निष्कर्ष प्रतिपादित किया जाता है, जिससे अनुसंधान को एक निश्चित दिशा प्राप्त होती है, इस कारण संशोधन कार्य सफलता की और बढता है l प्रस्तुत शोधप्रबंध कार्य के लिए उपयुक्त ऐसे कार्यवाहक पूर्वानुमान निर्धारित किये है l

1) ग्रामीण जीवन जीते समय उसे अनेक समस्याओं सामना करना पडता हैं l

2) भारतीय समाजव्यवस्था में स्त्री सदियो से अधिक वंचित और प्रताडित रही है l

3) बाँध क्षेत्र में रहनेवाले आदिवासी लोग अनेक समस्याओं से ग्रस्त है l

4) भारतीय नारी जीवन समस्याओ से ग्रस्त है l

5) वीरेंद्र जैन के कुछ उपन्यास नारी जीवन पर आधारित है l

6) वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में उनके समय और समाज का आख्यान है l

7) वीरेंद्र जैनजी के उपन्यासो में चित्रित सामाजिक जीवन का यथार्थ वर्तमान समाज की प्रासंगिकता है l

8) वीरेंद्र जैन के उपन्यासों की भाषा सार्थक और संवेदनशील है l

अनुसंधान कार्य की उपयोगीता :

1) समकालीन हिंदी साहित्य, रचनाकार के रुप में वीरेंद्र जैन जी का अनुसंधान कार्य एवं पाठको को पहचान होगी l

2) वर्तमान ग्रामीण जीवन,स्त्री जीवन सामाजिक जीवन को प्रस्तुत शोध के माध्यम से नई सोच, एवं नये मुल्य मिलेगे l

3) प्रस्तुत शोध के माध्यम सें ग्रामीण जीवन एवं नारी जीवन की यथार्थ स्थिती की वर्तमान

समाज को पहचना होगी ।

4) प्रस्तुत शोध के माध्यम से वर्तमान समाज को आदिवासी लागों की समस्या उन्मुलन के लिए कई समाधान एवं उपाय मिलेंगे ।

5) नारी जीवन की पीडा उत्पीडन और उपेक्षित स्थिती वर्तमान समाज को सोचने पर मजबुर करेगी ।

6) समाज में हो रहा भ्रष्टाचार, शोषण, जातीभेद, अंधश्रध्दा आदि समस्या की रोखधाम होने मे मदत होगी ।

7) प्रस्तुत शोध के माध्यम में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक की परिस्थितीयो पहचान समाज को होगी ।

अनुसंधान कार्य पध्दतियाँ :

प्रस्तुत शोध के शीर्षक को, ध्यान में रखते हुए अनुसंधान कार्य में निम्न शोध पध्दतियों को प्रयोग किया जाएगा ।

1) आलोचनात्मक शोध पध्दति

2) मननात्मक / चिंतनात्मक शोध पध्दती

3) वर्णनात्मक शोध पध्दती

4) तुलनात्मक शोध पध्दती

अनुसंधान की रुपरेखा

प्रस्तुत अनुसंधान के शीर्षक को ध्यान में रखते हुए यह अनुसंधान पाँच अध्यायों में विभाजित किया जाएगा। वह निम्नलिखित रुप से है

"वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित समस्याओ का अनुशीलन "

प्रथम अध्याय : 'वीरेंद्र जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

प्रस्तुत अध्याय में वीरेंद्र जैन जी का जीवन परिचय और साहित्यिक परिचय का विस्तार से अध्ययन किया जाएगा। जन्म माता - पिता, परिवारजन, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, नौकरी जैसे कई आयामों के द्वारा उनके जीवन परिचय का अनुशीलन किया जाएगा। तो उनके कृतित्व में साहित्यिक परिचय का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही साहित्य लेखन की प्रेरणा और पुरस्कारों की चर्चा भी की जाएगी।

द्वितीय अध्याय : 'वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण समस्याएँ'

शोधप्रबंध के द्वितीय अध्याय में ग्रामीण जीवन की समस्यों को स्पष्ट करत हुऐ ग्रामीण जीवन के वर्गीकरण का अनुशीलन करना है। ग्रामीण जीवन का चित्रण करते समय वीरेंद्र जैन ने जाती भेद की समस्या पर अपनी पैनी दृष्टि डाली है। अज्ञान और अशिक्षा के कारण कई अंधविश्वासी धोरणाएँ जन्म लेती है उनके उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की हर एक समस्या आयी हुई हैं।

तृतीय अध्याय : 'वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित बाँध पीडित अदिवासीओं की समस्याएँ '

शोधप्रंबध के तृतीय अध्याय में बाँध पीडित अदिवासी लोंगो की समस्योंआ का विस्तार से अध्ययन किया जाएगा। डूब उपन्यास में संस्कार राजघाट बाँध परियोजना में आनेवाले गाँवों का पुनर्वसन नहीं करती है। बाँध पीडित पूनर्वसन न होने की वजह सें चिंतित रहतें है। उनका पूनर्वास अच्छी तरह सें नहीं किया जाता है। उन्हे नेता, जमीदार, साहुकार, सरकारी अधिकारी और डाकु लुटते है। यह विकास के पिछे छुपा काला सच है। जिसे वीरेंद्र जैंन ने 'डुब' और 'पार' उपन्यास में व्यक्त किया है

चतुर्थ अध्याय : 'वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित महिलाओ की समस्याएँ'

प्रस्तुत अध्याय में वीरेंद्र जैन के नारी जीवन के उपन्यासों में आऐ हुऐ समस्याओं का अनुशीलन करना है। पुरुष प्रधान व्यवस्था में स्त्री का बुरी तरह से मानसिक एवं शारीरिक शोषण किया जाता है। उसे परिवार एवं समाज में निम्न स्थान दिया जाता है। भारतीय नारी को अनेक प्रकार के समस्याओ का सामना करना पडाता है। इसपर दृष्टी डालना है।

पचंम अध्याय : 'वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ'

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत वीरेंद्र जैन के उपन्यास में आनेवाले समस्याओं का अध्ययन करना है। राजनीतिक, आर्थिक, भ्रष्टाचार अदि समस्यों का अध्ययन विस्तार सें किया जाएगा।
समाज में जिन लेगों का अपना कोई सगा संबंधी नही होता उन बेसहारा लोगों को सहारा देने के लिए सरकार ने अनाथश्रमों की स्थापना की है। इन अनाथश्रमों सें चलनेवाले भ्रष्टाचार को वीरेंद्र जैननें अपने उपन्यास में दिखाया है। समाज में बेकारी, स्वार्थ, गरीबी, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार जातिभेद आदि समस्या का व्यापक अध्ययन करना है।

उपसंहार :-

शोध प्रबंध के पाँच अध्याय में प्रस्तुत शोध प्रबंध के सभी अध्यायों का सारांश सार रुप में चित्रित किया जाएगा। और अनुसंधान कार्य पूर्ण करने के बाद अनुभव के आधार पर निष्कर्ष एव उपलब्धियों को स्पष्ट किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

(१) **मनोहरलाल (संपा.) -** वीरेंद्र जैन का साहित्य (नई दिल्ली प्रथम संस्करण - १९९७)

(२) **वीरेंद्र जैन -** सुरेखा पर्व (ऋषभचरण जैन एवं संताति नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८७)

(३) **वीरेंद्र जैन -** शब्दबध (वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण वर्ष १९९१)

(४) **डाँ. भास्कर उमराव भवर -** वीरेंद्र जैन का सम्रग साहित्य एक अध्ययन

(विनय प्रकाशन, कानपुर, संस्करण २०१६)

(५) **वीरेंद्र जैन -** डुब (वाणीप्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण १९९१)

(६) **वीरेंद्र जैन -** पार (वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण १९९४)

(७) **वीरेंद्र जैन -** पंचनामा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली १९९६

(८) **वीरेंद्र जैन** - व्यथा- कथा, जगतराम एवं संस, दिल्ली- १९८२

(९) **वीरेंद्र जैन -** रुका हुआ फैसला, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली - १९९१

(१०) **वीरेंद्र जैन -** अनातीत,प्रमोद प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करणं - १९८३

(११) **वीरेंद्र जैन -** सबसे बडा सिपटिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- १९८८

(१२) **वीरेंद्र जैन -** प्रतिदान, जगतराम एडं ससे, दिल्ली - १९८२

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे
हिंदी विभागाध्यक्ष
राजीव गांधी महाविद्यालय
मुदखेड, जिला नांदेड.

शोधकर्ता

सौ. शिंदे अनुराधा नामदेवराव